शिव–नाम की महिमा

शिवपुराण–वायवीयसंहिता (उ. ख. अ. 10/68–70) में सगुणोपासनाके आठ भेद बताये गये हैं। यथा–भक्तों में प्रीति, पूजा का अनुमोदन, स्वयं अर्चा करना, प्रभु के निमित्त अङ्गों की चेष्टा करना, कथा–श्रवण में भक्ति, स्वर, नेत्र और अङ्गों की विक्रिया, भगवान् का नित्य स्मरण और उनका ही आश्रय। इस प्रकार के चिह्न जिसमें हों वही सर्वश्रेष्ठ है, चाहे वह म्लेच्छ ही क्यों न हो–

मद्भक्तजनवात्सल्यं पूजायाञ्चानुमोदनम्।
स्वयमप्यर्चनञ्चैव मदर्थं चाङ्गचेष्टितम्।।
मत्कथाश्रवणे भक्तिः स्वरनेत्राङ्गविक्रियाः।
ममानुस्मरणं नित्यं यश्च मामुपजीवति।।
एवमष्टविधं चिह्नं यस्मिन् म्लेच्छेऽपि वर्तते।।

यद्यपि श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन (भक्ति के नौ अंग जिनका निरूपण शिवपुराण–रुद्रसंहिता–सतीखण्ड 23/22 में हुआ है) सभी समानरूप से फलप्रद हैं, तथापि इनमें स्मरण विशेषरूप से उल्लेखनीय है। निरन्तर नामस्मरण से मनुष्यका अन्तःकरण शुद्ध होकर शीघ्र ही अपना अभीष्ट फल प्राप्त कर लेता है। समस्त पुण्यों, श्रेय के सम्पूर्ण साधनों और समस्त यज्ञों में जपयज्ञ को ही सर्वोत्तम माना गया है।

सर्वेषामपि पुण्यानां सर्वेषां श्रेयसामपि।
सर्वेषामपि यज्ञानां जपयज्ञः परः स्मृतः।।

(स्कन्दपु. ब्रह्मखण्ड–ब्राह्मोत्तरखण्ड 1/7)[1]

श्रीमद्भागवत महापुराण में कहा गया है कि चोर, शराबी, मित्रद्रोही, ब्रह्मघाती, गुरुपत्नीगामी, ऐसे लोगों का संसर्गी; स्त्री, राजा, पिता और गाय को मारनेवाला, चाहे जैसा और चाहे जितना बड़ा पापी हो, सभी के लिये यही–इतना ही सबसे बड़ा प्रायश्चित्त है कि भगवान् के नामों का उच्चारण[2] किया जाय; क्योंकि भगवन्नामों के उच्चारण से मनुष्य की बुद्धि भगवान् के गुण, लीला और स्वरूप में रम जाती है और स्वयं भगवान् की उसके प्रति आत्मीय बुद्धि हो जाती है। बड़े–बड़े ब्रह्मवादी ऋषियों ने पापों के बहुत से प्रायश्चित्त–कृच्छ्र, चान्द्रायण आदि व्रत बतलाये हैं; परन्तु उन प्रायश्चित्तों से पापी की वैसी जड़ से शुद्धि नहीं होती, जैसी भगवान् के नामों का, उनसे गुम्फित

---

1. यह पुराण नाग पब्लिशर्स दिल्ली द्वारा 1982 में प्रकाशित है।
2. इस प्रसंग में 'नाम–व्याहरण' का अर्थ नामोच्चारणमात्र ही है।

पदों का[1] उच्चारण करने से होती है। क्योंकि वे नाम पवित्रकीर्ति भगवान् के गुणों का ज्ञान करानेवाले हैं।

स्तेनः सुरापो मित्रध्रुग ब्रह्महा गुरुतल्पगः।
स्त्रीराजपितृगोहन्ता ये च पातकिनोऽपरे।।
सर्वेषामप्यघवतामिदमेव सुनिष्कृतम्।
नामव्याहरणं विष्णोर्यतस्तद्विषया मतिः।।
न निष्कृतैरुदितैर्ब्रह्मवादिभिस्तथा विशुद्ध्यत्यघवान् व्रतादिभिः।।
यथा हरेर्नामपदैरुदाहृतैस्तदुत्तमश्लोकगुणोपलम्भकम्।।

(श्रीमद्भागवत 6/2/9-11)

वहीं पर आगे कहा गया है कि जैसे जान या अनजान में ईंधन से अग्नि का स्पर्श हो जाय तो वह भस्म हो ही जाता है, वैसे ही जानबूझकर या अनजान में भगवान् के नामों का संकीर्तन करने से मनुष्य के सारे पाप भस्म हो जाते हैं। जैसे कोई परम शक्तिशाली अमृत को उसका गुण न जानकर अनजान में पी ले तो भी वह अवश्य ही पीनेवाले को अमर बना देता है, वैसे ही अनजान में उच्चारण करने पर भी भगवान् का नाम[2] अपना फल देकर ही रहता है(क्योंकि वस्तु की स्वाभिक शक्ति विश्वास या श्रद्धा की अपेक्षा नहीं करती)।

अज्ञानादथवा ज्ञानादुत्तमश्लोकनाम यत्।
संङ्कीर्तितमघं पुंसो देहेदेधो यथानलः।।

---

1. 'नामपदैः' कहने का अभिप्राय यह है कि भगवान् का केवल नाम 'हरि-हरि', 'शिव-शिव', 'हर-हर', आदि अन्तःकरण की शुद्धि के लिये-पापों की निवृत्ति के लिये पर्याप्त है। "नमः नमामि" इत्यादि क्रिया जोड़ने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। नाम के साथ बहुवचन का प्रयोग-भगवान् के नाम बहुत-से हैं, किसी का भी संकीर्तन कर ले, इस अभिप्राय से है। एक व्यक्ति सभी नामों का उच्चारण करे, इस अभिप्राय से नहीं है। क्योंकि भगवान् के नाम अनन्त हैं; सब नामों का उच्चारण संभव नहीं है। तात्पर्य यह है कि भगवान् के एक नाम का उच्चारण करनेमात्र से सब पापों कि निवृत्ति हो जाती है। पूर्ण विश्वास न होने तथा नामोच्चारण के पश्चात् भी पाप करने के कारण ही उसका अनुभव नहीं होता। नामोच्चारण के बाद अगर पाप न किया जाय तो मुक्ति हो जाती है। इसीलिये कहा जाता है कि मरते समय भगवान् का नाम लेकर अजामिल आदि मुक्त हो गये। कारण यह है कि नामोच्चारण के बाद जीवन शेष न रहने से पुनः पाप की संभावना नहीं रहती। जीवन का अन्त कब होगा यह कोई नहीं जानता। इसलिये भगवान् के नामों का सतत जप करते रहना चाहिये।

2. वस्तु की स्वाभाविक शक्ति इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि यह मुझपर श्रद्धा रखता है कि नहीं जैसे अग्नि या अमृत। इसी प्रकार भगवान् का नाम अपनी स्वाभाविक शक्ति, पापनाशकी शक्ति, के लिये किसी के विश्वास या अविश्वास की अपेक्षा नहीं रखता।

यथागदं वीर्यतममुपयुक्तं यदृच्छया।
अजानतोऽप्यात्मगुणं कुर्यान्मन्त्रोऽप्युदृतः।।

(श्रीमद्भागवतमहापूराण 6/2/18-19)

पुनः कहा गया है कि जो लोग इस संसारबन्धन से मुक्त होना चाहते हैं, उनके लिये अपने चरणों के स्पर्श से तीर्थों को भी तीर्थ बनानेवाले भगवान् के नाम से बढ़कर और कोई साधन नहीं है; क्योंकि नाम का आश्रय लेने से मनुष्य का मन फिर कर्म के पचड़ों में नहीं पड़ता। भगवन्नाम के अतिरिक्त और किसी प्रायश्चित्त का आश्रय लेनेपर मन रजोगुण और तमोगुण से ग्रस्त ही रहता है तथा पापों का पूरा-पूरा नाश भी नहीं होता है।

नातः परं कर्मनिबन्धकृन्तनं मुमुक्षतां तीर्थपदानुकीर्तनात्।
न यत्पुनः कर्मसु सज्जते मनो रजस्तमोभ्यां कलिलं ततोऽन्यथा।।

(श्रीमद्भागवतमहापुराण 6/2/46)

पद्मपुराण में कहा गया है कि नाम-कीर्तन में परिश्रम तो थोड़ा होता है किन्तु फल भारी से भारी प्राप्त होता है-यह देखकर जो लोग इसकी महिमा के विषय में तर्क उपस्थित करते हैं, वे अनेकों बार नरक में पड़ते हैं।

अत्र ये विवदन्ते वै आयासलघुदर्शनात्।।
फलानां गौरवाच्चापि ते यान्ति नरकं बहु। (पद्मपुराण-स्वर्गखण्ड-50/26-27)[1]

वहीं पर आगे कहा गया है कि-अहो! संसार के लोग भाग्यदोष से अत्यन्त वञ्चित हो रहे हैं, क्योंकि वे नामोच्चारणमात्र से मुक्ति देनेवाले भगवान् का भजन नहीं करते।

अहो लोका अतितरां दैवदोषेण वञ्चिता।
नामोच्चारण मात्रेण मुक्तिदं न भजन्ति वै।। (पद्मपुराण-स्वर्गखण्ड-50/32)

वैशाख माहात्म्य के प्रसङ्ग में राजा महीरथ की कथा में महीरथ को उसके मन्त्री ने जो उपदेश दिया है उसमें एक जगह कहा गया है कि-लौकिक धर्म, मित्र, भाई-बन्धु, हाथ-पैरों का चलाना, देशान्तर में जाना, शरीर के क्लेश उठाना तथा तीर्थ के लिये यत्न करना आदि कोई भी परमपद की प्राप्ति में सहायता नहीं कर सकते; केवल परमात्मा में मन लगाकर उनका नाम-जप करने से उस पद की प्राप्ति होती है।(पातालखण्ड-अ. 95 संक्षिप्त पद्मपु., गीताप्रेस, पृ. 601)

नारदजी से ब्रह्माजी कहते हैं कि मेरा कथन सत्य है कि भगवान् के नामों का उच्चारण करनेमात्र से मनुष्य बड़े से बड़े पापों से मुक्त हो जाता है। नामकीर्तनमात्र से कुरुक्षेत्र, काशी, गया और द्वारका आदि सम्पूर्ण तीर्थों के सेवन का फल प्राप्त हो जाता है।

1. यह पुराण नाग पब्लिशर्स दिल्ली द्वारा 1984 में प्रकाशित है।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भाषितं मम सुव्रत।
नामोच्चारणमात्रेण महापापात्प्रमुच्यते।।
कुरुक्षेत्रं तथा काशी गया वै द्वारका तथा।
सर्वं तीर्थं कृतं तेन नामोच्चारणमात्रतः।।

(उत्तरखण्ड-72/20 व 22 संक्षिप्त पद्मपु., गीताप्रेस, पृ. 692)

मनुष्य काम, क्रोध, भय, द्वेष, लोभ, दम्भ से अथवा जिस किसी प्रकार से भी यदि भगवान् का भजन करे तो उसे दुःख नहीं भोगना पड़ता। (पद्मपुराण-पातालखण्ड-19/13)

क्रोधात्कामाद्भयाद्द्वेषाल्लोभाद्दंभान्नरः पुनः।
यथाकथंचिद्विभजन्न सदुःखं समश्नुते।।

यों तो भगवान् के अनेक नाम हैं, किंतु भगवान् शिव स्वयं कहते हैं- "हे वरानने! मेरा 'शिव' यह नाम उत्तमोत्तम है, वही परब्रह्म है। 'शिव' यह नाम मुझ ब्रह्म की अभिव्यक्ति है। शिव-नाम से यथार्थ में मुझे ही समझो। जो वेदान्त से प्रतिपादित अव्यक्त परब्रह्म है, द्व्यक्षर 'शिव' भी वही है। दो अक्षरों का यह 'शिव' नाम परब्रह्मस्वरूप एवं तारक है, इससे भिन्न कोई तारक नहीं है"-

शिव इत्यस्ति यन्नाम तद्धि नामोत्तमोत्तमम् ।
तदेव परमं ब्रह्म तदेव हि वरानने ।।
शिवनामस्वरूपेण व्यक्तं ब्रह्माहमेव हि ।
शिवनामाहमेवेति विजानीहि यथार्थतः ।।
यदव्यक्तं परं ब्रह्म वेदान्तप्रतिपादितम् ।
तदेवेदं विजानीहि शिव इत्यक्षरद्वयम् ।।
तारकं ब्रह्म परमं शिव इत्यक्षरद्वयम् ।
नैतस्मादपरं किञ्चित् तारकं ब्रह्म सर्वथा ।।

(शिवरहस्य-सप्तमांश, अ. 23, कल्याण, शिवांक, गीताप्रेस, पृ. 359 से उद्धृत)

भगवान् का नाम चलते-फिरते, दिन-रात, उठते-बैठते, जैसे हो वैसे ही जपना चाहिये, इसमें कोई बाधा नहीं है। फिर भी यदि नियम-संयम एवं पवित्रता से जप किया जाय तो विशेष फलदायी होता है।

अशुचिर्वा शुचिर्वापि सर्वकालेषु सर्वदा ।
नामसंस्मरणादेव संसारान्मुच्यते क्षणात् ।। (पद्मपुराण, पातालखण्ड-80/8)

अर्थात्-'जो मनुष्य पवित्रता अथवा अपवित्रता का विचार न कर सदा-सर्वदा नाम-स्मरण में रत रहता है, वह बहुत शीघ्र संसार(अवागमन) से मुक्त हो जाता है।'

सौरपुराण में जीवन की क्षणभंगुरता को ध्यान में रखते हुए कहा गया है-

निकटा एव दृश्यन्ते कृतान्तनगरद्रुमाः।
शिवं स्मर शिवं ध्याय शिवं चिन्तय सर्वदा।। (सौरपुराण, अ. 47/34)

भावार्थ यह है कि अरे मूर्ख! यमपुरी की वृक्षावली निकट ही दिखलायी देती है, इसलिये शिव का स्मरण कर, शिव का ही ध्यान कर और शिव का ही सर्वकाल में स्मरण कर।

शिवधर्मपुराण में कहा गया है कि-

गच्छंस्तिष्ठन् स्वपञ्जाग्रदुन्मिषन्निमिषन्नपि।
शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि शिवं सर्वत्र चिन्तयेत्।।

(शिवधर्मपुराण, अ. 11, शिवांक पृ. 359 से उद्धृत)

भावार्थ यह है कि चलते-फिरते, सोते-जागते, उठते-बैठते तथा आँख खोले हुए और मूँदे हुए, पवित्रता में अथवा अपवित्रता में सर्वत्र शिव का ही चिन्तन करना चाहिये।

शिवगीता में भी कहा गया है कि चलते-बैठते में भी जो उनका(शिव का) स्मरण करता है, उसको वे अभिष्ट फल देते हैं।

गच्छन्समुपविष्टो वा तस्याभीष्टं प्रयच्छति।
.... (शिवगीता-1/27)

शास्त्रों में नाम-जप का जो फल कहा गया है वह बार-बार बहुत दिनोंतक नामजप करने से भी नहीं मिलता, इसका कारण महात्माओं ने दस प्रकार के नामापराध बताये हैं जिसे व्यक्ति जान या अनजान में करता रहता है। निम्न दस नामापराधों से बचकर नामजप करने से अतिशीघ्र फल होता है।

गुरोरवज्ञां साधूनां निन्दां भेदं हरौ हरे।
वेदनिन्दां हरेर्नामबलात् पापसमीहनम्।।
अर्थवादं हरेर्नाम्नि पाषण्डं नामसंग्रहे।
अलसे नास्तिके चैव हरिनामोपदेशनम्।।
नामविस्मरणं चापि नाम्न्यनादरमेव च।
संत्यजेद् दूरतो वत्स दोषानेतान् सुदारुणान्।। (नारदपु. पूर्वभाग 82/22-24)

गुरु की अवज्ञा, साधुओं की निन्दा, हरि(भगवान् विष्णु) एवं हर(भगवान् शिव) में भेद बुद्धि, वेद की निन्दा, भगवान् के नाम के बलपर पापाचरण, भगवान् के नामों में अर्थवाद-बुद्धि, नाम-ग्रहण में पाखण्डी, आलसी और नास्तिकों को भगवन्नाम का उपदेश, नाम का विस्मरण और नाम में अनादर, इन भयानक दोषों को दूर से ही त्याग देना चाहिये।

यदि प्रमादवश इन दसों में से कोई-सा भी अपराध हो जाय तो उससे छूटकर शुद्ध होने

का उपाय भी पुनः नामकीर्तन ही है। भूल के लिए पश्चात्ताप करते हुए प्रभुनाम-कीर्तन से नामापराध छूट जाता है-

नामापराधयुक्तानां नामान्येव हरन्त्यघम्।
अविश्रान्तिप्रयुक्तानि तान्येवार्थ कराणि यत्।। (पद्मपुराण/ब्रह्मखण्ड 25/23)

निरन्तर नामकीर्तन से सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं- अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष चारों पदार्थों की सिद्धि अनायास हो जाती है। भगवान् शिव के नाम का माहात्म्य अनेक शास्त्रों में भरे पड़े हैं-चाहे वे वैष्णव हों या शैव। यथार्थ में तो नाम का माहात्म्य न तो शास्त्र और न ही ऋषि-मुनि और न तो देवता ही कह सकते हैं।

ब्रह्मवैवर्तपुराण(जो वैष्णवों का एक प्रमुख पुराण है) में भगवान् श्रीकृष्ण ने शिवलिंग के स्थापन और पूजन का महान् फल बताते हुए कहा है-जो 'महादेव', 'महादेव' और 'महादेव' का उच्चारण करता है, उसके पीछे मैं उस नाम-श्रवण के लोभ से अत्यन्त भयभीत की भाँति(अर्थात् चुपके-चुपके) जाता हूँ। जो मनुष्य 'शिव' शब्द का उच्चारण करके प्राणों का परित्याग करता है, वह कोटि जन्मों के उपार्जित पाप से मुक्त हो मोक्ष प्राप्त कर लेता है। 'शिव' शब्द कल्याण वाचक है और 'कल्याण' शब्द मुक्ति का। शिव के उच्चारण से मोक्ष या कल्याण की प्राप्ति होती है, इसलिये महादेवजी को शिव कहा गया है।

महादेव महादेव महोदवेति वादिनः।।
पश्चाद्यामि महात्रस्तो नामश्रवणलोभतः।
शिवेति मन्त्रमुच्चार्य प्राणांस्त्यजति यो नरः।।
कोटिजन्मार्जितात् पापान्मुक्तो मुक्तिं प्रयाति सः।
शिवं कल्याणवचनं कल्याणं मुक्तिवाचिकम्।।
यतस्तत् प्रभवेत्तेन स शिवः परिकीर्तितः।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण-ब्रह्मखण्ड/6/48-51)

वहीं पर आगे कहा गया है कि धन और भाई-बन्धुओं का वियोग होनेपर जो शोक-सागर में डूब गया हो, वह मनुष्य शिव शब्द का उच्चारण करके सर्वथा कल्याण का भागी होता है। 'शि' पापनाशक अर्थ में है और 'व' मोक्षदायक अर्थ में। महादेवजी मनुष्यों के पापहन्ता और मोक्षदाता हैं। इसलिये उन्हें शिव कहा गया है। जिसकी वाणी में 'शिव'-यह मंगलमय नाम विद्यमान है, उसके करोड़ों जन्मों का पाप निश्चय ही नष्ट हो जाता है।

विच्छेदे धनबन्धूनां निमग्नः शोकसागरे।।
शिवेति शब्दमुच्चार्य्य लभेत् सर्वशिवंनरः।
पापघ्ने वर्तते शिश्च वश्च मुक्तिप्रदे तथा।।

पापघ्नो मोक्षदो न्त्रृणां शिवस्तेन प्रकीर्त्तितः।
शिवेति च शिवंनाम यस्य वाचि प्रवर्त्तते।।
कोटिजन्मार्जितं पापं तस्य नश्यति निश्चितम्।

(ब्रह्मवैवर्तपुराण - ब्रह्मखण्ड 6/51-54)

स्कन्दपुराण के माहेश्वरखण्ड के अन्तर्गत केदारखण्ड में कहा गया है कि - जिनकी जिह्वा के अग्रभाग पर सदा भगवान् शंकर का दो अक्षरोंवाला नाम(शिव) विराजमान रहता है वे धन्य हैं, वे महात्मा पुरुष हैं तथा वे ही कृतकृत्य हैं। आज भी जिन्होंने 'शिव' इस अविनाशी नाम का उच्चारण किया है, वे निश्चय ही मनुष्यरूप में रुद्र हैं; इसमें संशय नहीं है।

तेधन्यास्ते महात्मानः कृतकृत्यास्तथैव च।।
द्व्यक्षरं नाम येषां च जिह्वाग्रे संस्थितं सदा।
शिव इत्यक्षरं नाम यैरुदीरितमद्य वै।।
ते वै मनुष्यरूपेण रुद्राः स्युर्नात्र संशयः।

(स्कंदपु. - माहे. - केदा. - अध्याय 27/21-22)

शिवपुराण की विद्येश्वर संहिता में कहा गया है कि - जो शिवनामरूपी नौका पर आरूढ़ हो संसाररूपी समुद्र को पार करते हैं, उनके जन्म - मरणरूप संसार के मूलभूत वे सारे पाप निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। महामुने! संसार के मूलभूत पातकरूपी पादपों का शिवनामरूपी कुठार से निश्चय ही नाश हो जाता है। जो पापरूपी दावानल से पीड़ित हैं, उन्हें शिवनामरूपी अमृत का पान करना चाहिये। पापों के दावानल से दग्ध होनेवाले लोगों को उस शिव - नामामृत के बिना शान्ति नहीं मिल सकती। जो शिवनामरूपी सुधा की वृष्टिजनित धारा में गोते लगा रहे हैं, वे संसाररूपी दावानल के बीच में खड़े होनेपर भी कदापि शोक के भागी नहीं होते। जिन महात्माओं के मन में शिवनाम के प्रति बड़ी भारी भक्ति है, ऐसे लोगों की सहसा और सर्वथा मुक्ति होती है।

शिवनामतरीं प्राप्य संसाराब्धिंतरन्ति ते।
संसारमूलपापानि तानि नश्यन्त्यसंशयम्।।
संसारमूलभूतानां पातकानां महामुने।
शिवनामकुठारेण विनाशो जायते ध्रुवम्।।
शिवनामामृतं पेयं पापदावानलार्दितैः।
पापदावाग्नितप्तानां शान्तिस्तेन विना न हि।।
शिवेति नामपीयूषवर्षाधारापरिप्लुताः।
संसारदवमध्येऽपि न शोचन्ति कदाचन।।
शिवनाम्नि महद्भक्तिर्जाता येषां महात्मनाम्।

तद्विधानां तु सहसा मुक्तिर्भवति सर्वथा।।

(शि. पु. वि. सं. 23/29-33)

उसी संहिता में पुनः कहा गया है कि- "शिवनामरूपी दावानल से बड़े-बड़े पाताकों के असंख्य पर्वत अनायास भस्म हो जाते हैं-यह सत्य है, सत्य है। इसमें संशय नहीं- "

शिवेतिनामदावाग्नेर्महापातक पर्वताः।

भस्मीभवंत्यनायासात्सत्यं सत्यं न संशयः।। (शि. पु. वि. सं. 23/23)

"हे मुने! इतने तो पाप भी पृथ्वी पर नहीं हैं जिन्हें मनुष्य कर सके और वे शिवनाम द्वारा नष्ट न हो जायँ। शिवनाम से सभी प्रकार के पातक नष्ट होकर पवित्रता प्राप्त होती है।"

पातकानि विनश्यन्तियावंति शिवनामतः।

भुवितावंतिपापानि क्रियंतेन नरैर्मुने।। (शि. पु. वि. सं. 23/27)

कूर्मपुराण में व्यासजी अर्जुन से कहते हैं कि कृतयुग में ब्रह्मा, त्रेता में भगवान् सूर्य, द्वापर में भगवान् विष्णु और कलियुग में महेश्वर रुद्र ही मुख्य देवता हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा सूर्य तीनों कलियुग में पूजे जाते हैं परन्तु पिनाकधारी रुद्र चारों युगों में पूजे जाते हैं अतः भगवान् शिव का नाम कलियुग में सबसे उत्तम है।

ब्रह्माकृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान् रविः।

द्वापरे दैवतं विष्णुः कलौ रुद्रो महेश्वरः।।

ब्रह्मा विष्णुस्तथा सूर्यः सर्व एव कलिष्वपि

पूज्यते भगवान् रुद्रश्चतुर्ष्वपि पिनाकधृक्।। (कूर्मपु. वि. अ. 27/18-19)

जो पुरुष अन्त समय में शिव का स्मरण करता है, वह चाहे ब्रह्महत्यारा हो, चाहे शराबी हो, चोर हो अथवा गुरुस्त्रीगामी ही क्यों न हो, शिव के साथ सायुज्य को प्राप्त होता है।(सौ. पु. अ. 66)

शिवगीता में भगवान् शिव कहते हैं कि यदि कोई महापापी भी देहान्त में मेरा स्मरण करे व(नमः शिवाय) इस पंचाक्षरी विद्या का उच्चारण करे तो निःसन्देह उसकी मुक्ति हो जाती है-

महापापैरपि स्पृष्टो देहान्ते यस्तु मां स्मरेत्।

पञ्चाक्षरीं वोच्चरति स मुक्तो नात्र संशय।। (शिवगीता 16/18)

जो मनुष्य प्रसंगवश, कौतूहल से, लोभ से, भय से अथवा अज्ञान से भी 'हर'-नाम का उच्चारण करता है, वह सारे पापों से छूट जाता है।

प्रसङ्गात्कौतुकाल्लोभाद् भयादज्ञानतोऽपि वा।

हर इत्युच्चरन्मर्त्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते।। (सौरपुराण 7/31)

इसी तरह शिवगीता में भगवान् शिव द्वारा कहा गया है कि अति आश्चर्य अथवा भय और शोक प्राप्त हुआ हो वा छींकने अथवा और कोई रोग में जो किसी बहाने से भी मेरा (शिव का)

नाम उच्चारण करता है वह परमगति को प्राप्त हो जाता है-

आश्चर्ये वा भये शोके क्षुते वा मम नामयः।
व्याजेन वा स्मरेद्यस्तु स याति परमां गतिम्।। (शिवगीता 16/17)

वहीं पर आगे कहा गया है कि व्यक्ति शिव की उपासना संबंधी अन्य क्रियाएँ करे अथवा न करे परन्तु जो केवल शिव का नाम जपता है वह सदामुक्तस्वरूप है।

अन्यानि शैवकर्माणि करोतु न करोतु वा।
शिवनाम जपेद्यस्तु सर्वदा मुच्यते तु सः।। (शिवगीता 16/22)

श्रीमद्भागवत में सती अपने पिता दक्ष से कह रहीं हैं कि जिनका 'शिव' यह दो अक्षरोंवाला नाम प्रसंगवश एक बार भी मुख से निकल जानेपर मनुष्य के समस्त पापों को तत्काल नष्ट कर देता है और जिनकी आज्ञा का कोई भी उल्लङ्घन नहीं कर सकता, उन्हीं पवित्रकीर्ति मङ्गलमय भगवान् शंकर से आप द्वेष करते हैं। अवश्य ही आप अमङ्गलरूप हैं।

यद् द्व्यक्षरं नाम गिरेरितं नृणां
सकृत्प्रसङ्गादघमाशु हन्ति तत्।
पवित्रकीर्तिं तमलङ्घ्यशासनं
भवानहो द्वेष्टि शिवं शिवेतरः।। (श्रीमद्भागवत पु. 4/4/14)

उपरोक्त उद्धरण से यह भी स्पष्ट है कि जो भगवान् शिव से विमुख होता है वह अमंगल-रूप होता है। अर्थात् न तो उसका भला होता है और न दूसरों का जिनसे वह जुड़ा होता है।

शिवोपनिषद् में कहा गया है कि शिवनाम का कीर्तन करने से सभी पातकों से निवृत्ति हो जाती है तथा व्यक्ति परमपद को प्राप्त कर लेता है।

नामसंकीर्तनादेव शिवस्याशेषपातकैः।
यतः प्रमुच्यते क्षिप्रं मन्त्रोऽयं द्व्यक्षरः परः।।
यः शिवं शिवमित्येवं द्व्यक्षरं मन्त्रमभ्यसेत्।
एकाक्षरं वा सततं स याति परमं पदम्।। (शिवोपनिषद् 1/20-21)

पद्मपुराण में भगवान् शिव की महिमा बतलाते हुए मातलि(इन्द्र के सारथी) राजा ययाति से कहते हैं कि जो लोग भगवान् शिव का प्रसंगवश भी स्मरण या नामकीर्तन अथवा नमस्कार कर लेते हैं, उन्हें अनुपम सुख की प्राप्ति होती है। फिर जो निरन्तर उनके भजन में ही लगे रहते हैं, उनके विषय में तो कहना ही क्या है।(पद्मपुराण-भूमिखण्ड-अध्याय-71/17-18)

प्रसंगेनापियेकुर्युः शंकरस्मरणंनराः।।
तैर्लभ्यंत्वतुलंसौख्यंकिंपुनस्तत्परायणैः। (पद्मपु. भूमिख. 71/17-18)

नारदजी मोह के वशीभूत हो भगवान् विष्णु को श्राप दे देते हैं और भगवान् उसे स्वीकार

कर अपनी माया को हटा लेते हैं। माया के हटते ही नारदजी को ज्ञान हो जाता है और भयभीत होकर श्रीहरि के चरण पकड़ लेते हैं और कहते हैं- "हे शरणागत के दुःखों को हरनेवाले! मेरी रक्षा कीजिये। हे कृपालु! मेरा शाप मिथ्या हो जाय। भगवन्! मैंने आपको अनेक खोटे वचन कहे। मेरे पाप कैसे मिटेंगे? मेरे दिल में जो घोर अशान्ति और आत्मग्लानि की पीड़ा हो रही है वह कैसे मिटेगी?"

तब भगवान् श्रीहरि उत्तर देते हैं कि जाकर शंकरजी के शतनाम[1] का जप करो, इससे तुम्हारे हृदय में तुरन्त शान्ति हो जायगी तथा तुम्हारे पाप मिट जायँगे। रामचरितमानस में तुलसीदास लिखते हैं कि-

मृषा होउ मम श्राप कृपाला।...।।
मैं दुर्बचन कहे बहुतेरे। कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे।।
जपहु जाइ संकर सत नामा। होइहि हृदयँ तुरत बिश्रामा।।

(रामचरितमानस-बालकाण्ड 137/2-3)

उपरोक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि शिवनामजप से पाप-ताप सब मिट जाते हैं। नारदजी का उपरोक्त प्रसंग एवं शतनाम जपने का उल्लेख शिवपुराण रुद्रसंहिता अध्याय-4 में भी है।

रामचरितमानस में आगे उत्तरकाण्ड में काकभुशुण्डिजी के गुरु भगवान् शिव की प्रार्थना में कहते हैं-

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां।।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।।

(रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड 107 ख/7)

भावार्थ यह है कि जबतक पार्वती के पति के चरणकमलों को मनुष्य नहीं भजते, तबतक उन्हें न तो इह लोक और न परलोक में सुख-शान्ति मिलती है और न उनके दुःखों का नाश होता है।

भगवान् शंकर परम कृपालु हैं, उनके जैसा शीघ्र प्रसन्न होनेवाला कोई भी नहीं है। अतः उनकी कृपा-प्राप्ति के लिये उनका भजन करना चाहिये। उनकी कृपा की प्राप्ति हो जानेपर मनुष्य न केवल भवसागर से पार हो जाता है, अपितु उसे सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं। तुलसीदास भगवान् शिव की दयालुता एवं नाम की महिमा मानस में इस प्रकार बताते हैं-

जरत सकल सुर बृंद विषम गरल जेहिं पान किय।
तेहि न भजसि मन मंद को कृपालु संकर सरिस।।

(रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, प्रारंभ का सोरठा)

भावार्थ यह है कि जिस भीषण हलाहल विष से सब देवतागण जल रहे थे उसको जिन्होंने

1. भगवान् शिव के जिन शतनामों को नारदजी ने जपा उसका उल्लेख इसी पुस्तक में अन्यत्र हुआ है।

(दयावश) स्वयं पान कर लिया, रे मन्द मन! तू उन शंकरजी को क्यों नहीं भजता? उनके समान कृपालु (और) कौन है?

पुनः **प्रभु समरथ सर्बग्य सिव सकल कला गुन धाम।**

जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम।। (मानस/बा. काण्ड/दोहा 107)

भावार्थ है - हे प्रभो! आप(शिव) समर्थ, सर्वज्ञ और कल्याणस्वरूप हैं। सब कलाओं और गुणों के निधान हैं और योग, ज्ञान तथा वैराग्य के भण्डार हैं। आपका नाम शरणागतों के लिये कल्पवृक्ष(अर्थात् सभी कामनाओं को पूरा करनेवाला) है।

रुद्रहृदयोपनिषद् में व्यासजी शुकदेवजी को भगवान् शिव की महिमा बताते हुए कह रहे हैं कि "भगवान् रुद्र सर्वदेवरूप हैं और सब देवता रुद्रस्वरूप हैं। ....रुद्र ब्रह्मा और विष्णुस्वरूप हैं। .... प्रयोजनानुसार रुद्र ने अपनी एक ही मूर्ति को तीन(ब्रह्मा, विष्णु एवं रुद्र) प्रकार से व्यवस्थित किया है। ...."श्री रुद्र रुद्र रुद्र" इस प्रकार से जो बुद्धिमान् जपता है, इससे समस्त देवों का कीर्तन हो जाने के कारण वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।"

सर्वदेवात्मको रुद्रः ......ब्रह्मविष्णुमयो रुद्र......

प्रयोजनार्थं रुद्रेण मूर्तिरेका त्रिधाकृता।

...

श्री रुद्र रुद्र रुद्रेति यस्तं ब्रूयाद्विचक्षणः।

कीर्तनात्सर्वदेवस्य सर्वपापैः प्रमुच्यते। (रुद्रहृदयोपनिषद् 4 - 17)

शिवपुराण में(तथा अन्यत्र भी) कहा गया है कि ज्ञान की प्राप्ति अत्यन्त कठिन है, परन्तु भगवान् का भजन अत्यन्त सुकर है। इसलिये संतशिरोमणि पुरुष मुक्ति के लिये भी शिव का भजन ही करते हैं, ज्ञानस्वरूप मोक्षदाता परमात्मा शिव भजन के ही अधीन हैं।

ज्ञानं तु दुष्करं लोके भजनं सुकरं मतम्।

तस्माच्छिवं च भजत मुक्त्यर्थमपि सत्तमाः।।

शिवो हि भजनाधीनो ज्ञानात्मा मोक्षदः परः।

...

(शि. पु. कोटिरु. संहिता अ. 41/17 - 18)

आगे कहा गया है कि जो अनन्य भक्ति से युक्त होकर शम्भु का भजन करता है उसे अन्त में अवश्य ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है।

अनन्यया च भक्त्या वैयुक्तः शम्भुं भजेत्पुनः।

अन्ते च मुक्तिमायाति नात्र कार्या विचारणा।।

(शि. पु. कोटिरु. संहिता अ. 43/36)

पुनः कहा गया है कि मनु ने महान् पापों के लिये महान् और लघु पापों के लिये लघु

प्रायश्चित्त बताये हैं। उन अशेष पापकर्मों के लिये जो-जो प्रायश्चित्त-संबंधी कर्म बताये गये हैं, उन सबमें भगवान् शंकर का स्मरण ही सर्वश्रेष्ठ प्रायश्चित्त है। जिस पुरुष के चित्त में पापकर्म करने के अनन्तर पश्चात्ताप होता है, उसके लिये तो एकमात्र भगवान् शिव का स्मरण ही सर्वोत्तम प्रायश्चित्त है। प्रातः, सायं, रात तथा दोपहर आदि में भगवान् शिव का स्मरण करने से पापरहित हुआ मनुष्य समस्त क्लेशों से छूटकर माहेश्वरधाम, स्वर्ग अथवा मोक्ष प्राप्त कर लेता है। (शि. पु. उमा सं. 16/28-32)

माहेश्वरमवाप्नोति मध्याह्नादिषु संस्मरन्।
प्रातर्निशि च संध्यायांक्षीणपापो भवेन्नरः।।
मुक्तिं प्रयाति स्वर्गं वा समस्तक्लेशसंक्षयम्।
शिवस्यस्मरणादेव तस्य शंभोरुमापतेः।। (शि. पु. उमासंहिता अ. 16/31-32)

आदि में 'नमः' पद से युक्त 'शिवाय'-ये तीन अक्षर जिसकी जिह्वा के अग्रभाग में विद्यमान हैं, उसका जीवन सफल है। पञ्चाक्षर-मन्त्र के जप में लगा हुआ पुरुष यदि पण्डित, मूर्ख, अन्त्यज अथवा अधम भी हो तो वह पापपञ्जर से मुक्त हो जाता है।

नमस्करादिसंयुक्तं शिवायेत्यक्षरत्रयम्।
जिह्वाग्रेवर्तते यस्य सफलं तस्य जीवितम्।।
अंत्यजो वाधमो वापिमूर्खो वा पंडितोऽपि वा।
पंचाक्षरजपे निष्ठोमुच्यते पापपंजरात्।।

(शि. पु. वायवीयसं. उ. ख. 12/36-37)

चलते-फिरते, खड़े होते अथवा स्वेच्छानुसार कर्म करते हुए पवित्र या अपवित्र पुरुष के जप करनेपर भी यह मन्त्र(पञ्चाचर) निष्फल नहीं होता। अन्त्यज, मूर्ख, सदाचार से हीन, पतित आदि सभी का उद्धार करने के लिये कलियुग में इस मन्त्र के जप से बढ़कर कोई उपाय नहीं है।

सदाचारविहीनस्य पतितस्यान्त्यजस्य च।
पंचाक्षरात्परं नास्ति परित्राणं कलौ युगे।।
गच्छतस्तिष्ठतो वापि स्वेच्छया कर्म कुर्वतः।
अशुचेर्वा शुचेर्वापि मन्त्रोऽयन्न चनिष्फलः।।

(शि. पु. वायवीयसं. उ. ख. 14/62-63)

नैमिषारण्य में ऋषियों को लोमशजी शिव की महिमा बताते हुए कह रहे हैं कि जो लोग 'शिव' इस दो अक्षर के नाम का उच्चारण करेंगे उन्हें स्वर्ग और मोक्ष दोनों प्राप्त होंगे-इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

शिवेति द्व्यक्षरं नाम व्याहरिष्यन्ति ये जनाः।
तेषां स्वर्गश्च मोक्षश्च भविष्यन्ति न चान्यथा।। (स्क. पु. मा. के. 1/14)

वे आगे कहते हैं कि-हे हरे! और हे हर! इस भगवान् शिव एवं विष्णु[1] के नाम लेने से परमात्मा शिव ने बहुतेरे मनुष्यों की रक्षा की है।

हरे हरेति वै नाम्ना शम्भोश्चक्रधरस्य च।
रक्षिता बहवो मर्त्याः शिवेन परमात्मा।। (स्क. पु. मा. के. 5/87)

स्कन्दपुराण में ही शिवपूजन की महिमा के प्रसंग में कहा गया है कि जिनके मुख से **'नमः शिवाय'** यह पञ्चाक्षर मन्त्र सदा उच्चारित होता रहता है, वे मनुष्य भगवान् शंकर के स्वरूप हैं।(स्क. पु. मा. के. अ. 5/96)

'शिव' यह दो अक्षरों का नाम महापातकों का भी नाश करनेवाला है। जिन मनुष्यों के मुख से 'शिव' नाम का जप होता रहता है, उन्होंने ही इस सम्पूर्ण जगत् को धारण किया है।(स्क. पु. मा. के. अ. 5/100)

शिवेति द्व्यक्षरं नाम महापापप्रणाशनम्।
येषां मुखोद्गतं न्रॄणां तैरिदं धार्यते जगत्।। (स्क. पु. मा. के. 5/100)

भावार्थ यह है कि पंचाक्षर मंत्र को जपने का इतना फल होता है कि मनुष्य शिव के सारूप्य(एक प्रकार की मुक्ति) को प्राप्त कर लेता है। इसी प्रकार शिव का नाम जपनेवाला इतना पवित्र हो जाता है वह संसार की सभी वस्तुओं-नदी, पर्वत, जड़-चेतन आदि-को पवित्र करनेवाला हो जाता है। जब संसार में पाप का बाहुल्य हो जाता है तो संसार का प्रलय हो जाता है। पाप के बाहुल्य को रोकने एवं अपवित्र को पवित्र करने से शिवनाम का जापक संसार का धारण करनेवाला कहलाता है।

षडक्षर मन्त्र की महिमा को अन्यत्र बताते हुए कहा गया है कि जो श्रद्धापूर्वक इसका जप करता है, उसका ब्रह्महत्याजनित पाप भी नष्ट हो जाता है। दस बार षडक्षर मन्त्र(ॐ **नमः शिवाय**) के जप से एक दिन का और बीस बार के जप से मनुष्य एक वर्ष का पाप धो डालता है। भगवान् शिव का यह मन्त्र मनुष्यों के सब पाप और अमंगल हर लेनेवाला है।(संक्षिप्त स्क. पु. नागर खं. अ.-29 पृ. 844 गीताप्रेस, गोरखपुर)

सूतजी उपरोक्त मन्त्र की विशेषता बताते हुए कहते हैं कि जैसे सब देवताओं में त्रिपुरारि भगवान् शंकर श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार सब मन्त्रों में शिव का षडक्षर मन्त्र श्रेष्ठ है। वह जप करनेवाले पुरुषों को मोक्ष देनेवाला है। सिद्धि की इच्छा रखनेवाले सब श्रेष्ठ मुनि इस मन्त्र का सम्यग्रूप से

1. यहाँ विष्णु एवं शिव को अभिन्न या एक मानकर ऐसा कहा गया है। क्योंकि दोनों नामों के जापक को फल देनेवाले शिवजी ही है ऐसा कहा गया है।

सेवन करते हैं। देहधारी मनुष्य तभीतक दुःखों से भरे हुए इस भयंकर संसार में भटकते हैं, जबतक कि वे एक बार भी इस मन्त्र का उच्चारण नहीं करते। (स्क. पु. ब्राह्मख. ब्रह्मो. ख. 1/9-10, 17)

देवानां परमो देवो यथा वै त्रिपुरांतकः।
मंत्राणां परमो मंत्रस्तथा शैवः षडक्षरः।।
एष पंचाक्षरो मन्त्रो जप्त्तॄणां मुक्तिदायकः।
संसेव्यते मुनिश्रेष्ठैरशेषैः सिद्धिकांक्षिभिः।।

(स्क. पु. ब्राह्मख. ब्रह्मो. ख. 1/9-10)

'शिव' यह दो अक्षर का मन्त्र ही बड़े-बड़े पातकों का नाश करने में समर्थ है और उसमें 'नमः' पद जोड़ दिया गया, तब तो वह मोक्ष देनेवाला हो जाता है।(स्क. महापु. ब्रा. ब्रह्मोत्तरखण्ड अ. 1/22)

महापातकविच्छित्त्यै शिव इत्यक्षरद्वयम्।
अलं नमस्क्रियायुक्तो मुक्तये परिकल्पते।।

भगवान् शिव महादेव, महादेव और महादेव ऐसे नाम उच्चारण करनेवाले के प्रति ऐसे दौड़ते हैं, जैसे वत्सला गौ अपने बछड़े के प्रति-

महादेव महादेव महादेवेति वादिनम्।
वत्सं गौरिव गौरीशो धावन्तमनुधावति।।

(कल्याण के शिवोपासनांक पृ. 65 से उद्धृत)

जो पुरुष तीन बार 'महादेव, महादेव, महादेव' इस तरह भगवान् का नाम उच्चारण करता है, भगवान् एक नाम से मुक्ति देकर शेष दो नाम से सदा के लिये उसके ऋणी हो जाते हैं-

महादेव महादेव महादेवेति यो वदेत्।
एकेन मुक्तिमाप्नोति द्वाभ्यां शम्भू ऋणी भवेत्।।

(कल्याण के शिवोपासनांक पृ. 65 से उद्धृत)

शिव रहस्य में भगवान् शिव के वचन इस प्रकार हैं- "जो गति योगियों और काशी में शरीर छोड़नेवालों की होती है, वही गति मेरे नाम का कीर्तन करनेवालों को प्राप्त होती है। जो मनुष्य मेरे मुक्तिदायक-महेश, पिनाकपाणि, शम्भु, गिरिश, हर, शंकर, चन्द्रमौलि, विश्वेश्वर, अन्धकरिपु, पुरसूदन इत्यादि नामों का उच्चारण करते हुए मेरी अर्चा करते हैं, वे धन्य हैं। जो नीललोहित, दिगम्बर, कृत्तिवास, श्रीकण्ठ, शान्त, निरुपाधिक, निर्विकार, मृत्युञ्जय, अव्यय, निधीश, गणेश्वर-इत्यादि नामों का उच्चारण करते हुए मेरी पूजा करते हैं, वे धन्य हैं। मेरे नामरूपी अमृत का पान करनेवाले और निरन्तर मेरे चरणों का पूजन करनेवाले तथा मेरे लिङ्गों का पूजन करनेवाले मेरे प्रिय भक्त पुनः माता का दूध पीने की न तो इच्छा करते हैं और न उन्हें फिर वह प्राप्त

होता है। वे तो सारे दु:खों से छूटकर मेरे लोक में अनन्त कालतक निवास करते हैं। महेशरूपी नाम की दिव्य अमृतधारा से परिप्लावित मार्ग में से होकर भी जो निकल जाते हैं, वे कदापि शोक को प्राप्त नहीं होते।" (शिवरहस्य-सप्तमांश, प्रथम अध्याय कल्याण, शिवांक पृ. 361)

इसी ग्रन्थ में आगे कहा गया है कि- "भगवान् श्रीशिव यमदूतों को आज्ञा देते हैं कि आज कोई महापापी ब्रह्महत्या करनेवाला मरा है, उसके पापों की गिनती ही नहीं है। उसने मरते समय जो वाक्य कहे उन्हें मैं कहता हूँ, सुनो। 'आहर अस्त्रम्' (अस्त्र लाओ), 'संहर एतौ' (इनको मारो), 'प्रहर प्रहर' (प्रहार करो, प्रहार करो) यह कहता हुआ वह पापी ब्रह्महत्यारा मर गया। किंतु उपर्युक्त वाक्यों के उच्चारण से उसके सारे पाप नष्ट हो गये। 'आहर' आदि वाक्यों के अन्तर्भूत 'हर' नाम पापों का नाश करनेवाला है। उसी का मरणकाल में उच्चारण होने से उसके सारे पापों का नाश हो गया। बुद्धिपूर्वक अथवा अबुद्धिपूर्वक जो लोग मरण के समय मेरे नाम का उच्चारण करते हैं, वे मुक्त हो जाते हैं। 'प्रहर प्रहर' इन वाक्यों में मेरे नाम का जो दो बार उच्चारण हुआ, वही मेरी पूजा के लिये पर्याप्त हो गया। यह मैं भुजा उठाकर डंके की चोट कहता हूँ। मृत्युकाल में जो मेरे नामों का स्मरण करते हैं, मैं उन्हें शीघ्र ही मोक्ष देता हूँ, यह मेरी सत्य प्रतिज्ञा है। 'आहर' आदि वाक्यों में उपसर्गों को हटा देने से मेरे मुक्तिदायक नाम ही शेष रह जाते हैं। मृत्युकाल में यदि कोई महापातकी भी मेरा नाम लेता है तो उसे मैं उस नाम के प्रभाव से मोक्ष दे देता हूँ। मेरे जितने नाम हैं उन सबमें मुक्ति देने का स्वभाव है। मृत्युकाल में मेरा नाम लेकर अनेक मुनष्य मोक्ष को प्राप्त कर चुके हैं। नाम का माहात्म्य ही ऐसा है, इसमें किसी प्रकार का आश्चर्य नहीं करना चाहिये। 'हर' यह नाम अनेकों पापों को हरता है। मैं पापों को हरनेवाला हूँ, इसीलिये मुझे लोग 'हर' कहते हैं। हाल ही में महापाप करके अन्तकाल में शिवस्मरण करने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इसीलिये हे सौम्य! तुम लोग उसे यहाँ तुरंत ले आओ।"[1]

पुन: श्रीविष्णु ब्रह्माजी से कहते हैं कि "जो 'शम्भु, शम्भु, महेश' इन नामों का उच्चारण बराबर आनन्दपूर्वक करते हैं, उनको गर्भवास का भय नहीं होता। 'हे शिव! हे परमेश!' इस प्रकार आनन्दपूर्वक जो निरन्तर भगवान् शिव का नाम लेते हैं, उन्हें गर्भ में आना नहीं पड़ता। जो प्रतिदिन आनन्दपूर्वक शंकर का नाम लेते हैं, वे धन्यवाद के पात्र हैं-यह हम सत्य-सत्य कहते हैं। संसाररूपी

1. स्कन्दपुराण में राजा इन्द्रसेन की कथा के प्रसंग में इसी से मिलती-जुलती बातों का उल्लेख है।(स्क. पु. माहे. 5/64-86)। इन्द्रसेन ने अनजाने में 'हर' नाम का उच्चारण करके शिवलोक में चण्ड नामक गण का पद पाया। पुन: इस तरह की कथा पद्मपुराण के पातालखण्ड, अध्याय 111 में आती है। वहाँ पर भी मरते समय किसी पापी ने 'प्रहर' एवं 'आहर' शब्दों के उच्चारणमात्र से शिवलोक को प्राप्त किया क्योंकि इन शब्दों के अन्त में 'हर' शब्द लगा है।

घोर सागर से तरने के लिये शंकरनामरूप ही नौका है। इसको छोड़कर संसारसागर से पार होने का कोई और उपाय नहीं है। हे ब्रह्मन्! यह निर्मल शिव-नाम मधुर से भी मधुर है और मुक्ति को देनेवाला तथा संसारभय का नाश करनेवाला है।" (शिवरहस्य 7/20 कल्याण, शिवांक पृ. 361)

पूर्वकाल में एक पापी तथा कुष्ठ-रोग से पीड़ित ब्राह्मण कीकट (मगध) देश में रहता था। वह सदा ब्रह्महत्यादि पाप किया करता था। उस ब्राह्मण को वृद्धावस्था में सोमवार के दिन पुत्र पैदा हआ। उसने हर्ष से उस पुत्र का नाम 'सोमवासर' रख दिया। वह ब्राह्मण अपने पुत्र को बराबर हर काम में 'सोमवासर-सोमवासर' कहकर पुकारा करता था। एक दिन उस ब्राह्मण को साँप ने काट लिया। विष की ज्वाला से पीड़ित होकर बार-बार 'सोमवासर-सोमवासर' पुकारते-पुकारते ब्राह्मण का देहान्त हो गया। उसी समय शिव के गण तुरंत एक सुन्दर विमान लाये और उसको उसमें चढ़ाकर कैलास ले गये (शिवरहस्य 7/20 शिवांक पृ. 361-362)। इसी प्रसंग में आगे भगवान् शिव स्वयं यमराज से कहते हैं-

"जो पुरुष प्रसंगवश भी मेरा नाम उत्साहपूर्वक रटेगा, वह सर्वथा पापों से छूट जायगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। हे यमराज! मेरा नाम पापों के वन को जलाने में दावानल के समान है। मेरे एक नाम का उच्चारण करते ही पापों का समूह तुरंत नष्ट हो जाता है। मेरे नाम का श्रद्धापूर्वक स्मरण करने पर पाप कहाँ ठहर सकते हैं? क्योंकि पापों के झुंड का नाश करने में तो उसे वज्रपात की उपमा दी गयी है। जिस प्रकार कालाग्नि की ज्वालाओं से करोड़ों पर्वत जल गये थे, उसी प्रकार मेरे नामरूपी अग्नि से करोड़ों महापातक नष्ट हो जाते हैं। मैं उस चाण्डाल को भी निःसंदेह घोर संसारसमुद्र से तार देता हूँ, जिसका चित्त मेरे नाम-स्मरण में अनुरक्त है। जिसने पापों के झुंड का नाश करनेवाला मेरा नाम अन्तकाल में स्मरण कर लिया उसने घोर संसार-समुद्र को चुटकियों में पार कर लिया समझो। मेरे नाम का स्मरण मेरे ही स्मरण के तुल्य है और मेरी स्मृति हो जाने पर पाप कहाँ ठहर सकते हैं? हे धर्मराज! किसी पुरुष के अंदर पाप तभीतक ठहरते हैं, जबतक कि वह महापातकों का नाश करनेवाले मेरे नाम का स्मरण नहीं करता। करोड़ों महापातकों का नाश तभीतक नहीं होता, जबतक मन मेरे नाम-स्मरण में लीन नहीं हो जाता। इसने महापातकों का नाश करनेवाले मेरे 'सोम' नामका स्मरण करते हुए शरीर छोड़ा, इसलिये इसकी मुक्ति में कोई संदेह ही नहीं हो सकता। हे यम ! मैं तुम्हारे हित की एक बात और कहता हूँ, वह यह है कि तुम प्रतिदिन मेरे भक्तों की यत्नपूर्वक पूजा किया करो, क्योंकि वे मुझे सर्वदा प्यारे हैं।" (शिव. सप्त. अ. 20 शिवांक पृ. 362)

ब्रह्माजी महर्षि गौतम से कहते हैं -

"शिवनामरूपी मणि जिसके कण्ठ में सदा विराजमान रहती है, वह नीलकण्ठ का ही स्वरूप बन जाता है, इसमें कोई संदेह नहीं। हे द्विजवर ! तुम नित्य शंकर का पूजन करो और शिवनामामृत

का पान करो, शिवनाम से बढ़कर कोई दूसरा अमृत नहीं है। मृत्यु के समय 'शिव' ये दो अक्षर भगवान् शंकर की कृपा के बिना मनुष्य के होठों पर नहीं आते। शिवनामरूपी कुल्हाड़ी से संसाररूपी वृक्ष जब एक बार कट जाता है तो फिर वह दुबारा नहीं जमता। पाप ही संसाररूपी वृक्ष की जड़ों की जड़ है और शिवनाम का एक बार जप करने से ही उसका नाश हो जाता है।" (शिव. 7/22 शिवांक पृ. 362)

यमराज भी गौतमजी से कहते हैं-

"महान्-से-महान् पापी भी अथवा जिसने जीवन में कोई भी पाप न छोड़ा हो, वह अन्तकाल में यदि शिवनाम का उच्चारण कर ले तो वह फिर मेरा द्वार नहीं देख सकता। 'शिव'-शब्द का उच्चारण किये बिना ब्राह्मण भी मुक्त नहीं हो सकता और 'शिव'-शब्द का उच्चारण कर चाण्डाल भी मुक्त हो सकता है। यों तो शिवजी के सभी नाम मोक्षदायक हैं, किंतु उन सबमें 'शिव' नाम सर्वश्रेष्ठ है, उसका माहात्म्य गायत्री के समान है।" (शिव. 7/22 शिवांक पृ. 362)

बृहद्धर्मपुराण में भी कहा गया है कि दो अक्षरोंवाला 'शिव'-नाम अमंगलों का नाश करनेवाला है तथा इसके स्मरणमात्र से पापों के ढेर समाप्त हो जाते हैं।

शिवेति द्व्यक्षरं नाम यस्यामङ्गलनाशकम्।।
केवलस्मरणेनैव पापराशीन्निवारयेत्। (बृहद्धर्मपु. 37/58-59)

श्रुति का प्रमाण है कि संसार के दुःख की शान्ति के लिये शिव के नाम से भिन्न कोई दवा नहीं है।

भवव्याधिशान्त्यै भवनाम भिन्नं न भैषज्यमास्ते श्रुतिस्तत्प्रमाणम्
(बृहद्धर्मपु. 39/31)

इस धरती पर जो मनुष्य भगवान् शिव के नाम का कीर्तन करता है उसके फलों को शेषनाग भी बताने में असमर्थ हैं। भगवान् शिव के कीर्तनमात्र से ऐसा मनुष्य भी मुक्ति को प्राप्त कर लेता है जिसने न तो तीर्थ, न तो यज्ञ, न तो दान और न ही व्रत किया हो।

कृत्तिवासेति यो नाम कीर्त्तयेत् भुवि मानवः।
तस्य यत् तत् फलं वक्तुं शेषदेवो न शक्तये।।
विना तीर्थैर्विनायज्ञैर्विनादानैर्विना व्रतैः।
मुक्तिं प्रयान्ति मनुजाः कृत्तिवासेति कीर्त्तनात्।। (एकाम्रपुराणम् 42/71-72)

सौरपुराण (अ. 65) में लिखा है-

'जो बिल्ववृक्ष के नीचे बैठकर तीन रात उपोषित रहकर पवित्रतापूर्वक 'शिव'-नाम का एक लाख जप करता है, वह भ्रूणहत्या के पाप से छूट जाता है।'

'जितने भी स्थूल अथवा सूक्ष्म पाप हैं, वे सारे-के-सारे केवल क्षणभर शिव का चिन्तन करने से तुरंत नष्ट हो जाते हैं।'

'जल के अंदर निमग्न होकर शिव का ध्यान करते हुए प्रसन्न-चित्त से 'हर' इस नाम को केवल आठ बार जपने से मनुष्य पापों से छूट जाता है।'

'महादेव का स्मरण करनेवाले यदि पापी भी हों तो उन्हें महात्मा ही समझना चाहिये, यह मैं तुमसे सत्य कहता हूँ।'

सौरपुराण में ही अन्यत्र कहा गया है-

'भगवान् शिव के नाम का कीर्तन करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।'

नाम संकीर्तनाद्यस्य भिद्यते पापपञ्जरम् (सौ. पु. 7/24)

'व्यक्ति पञ्चाक्षर मन्त्र के जप से भगवान् शिव का गण हो जाता है।'

पञ्चाक्षर जपेद्यस्तु शिवास्यानुचरो भवेत्।। (सौ. पु. 65/3)

शिवपुराण में कहा गया है कि शिवनाम के स्मरण से धार्मिक कृत्य एवं कर्मों की न्यूनता पूर्ण हो जाती है-

यत्पादपद्मस्मरणाद्यस्यनामजपादपि।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्।। (शिवपु., कै. सं. 12/64)

शिवगीता के अनुसार नाम-कीर्तन का सबको अधिकार है-

नामसंकीर्तने ध्याने सर्व एवाधिकारिणः। (शिवगीता 16/12)

परमात्मा के विशिष्ट नाम ये हैं-

न च नामानि रूपाणि शिवस्य परमात्मनः।
तथापि मायया तस्य नामरूपे प्रकल्पिते।।
शिवो रुद्रो महादेवः शंकरो ब्रह्म सत् परम् ।
एवमादीनि नामानि विशिष्टानि परस्य तु ।। (सूतसं., यज्ञवै. खं., अं. 27/28-29)

अर्थात्-भगवान् शिव का कोई भी नाम-रूप नहीं है तथापि माया से अनेक नाम-रूप दिये गये हैं। शिव, रुद्र, महादेव, शंकर, ब्रह्म, सत्, परम आदि नाम उनमें से विशेष जानना चाहिये।

नारद महापुराण में व्यासजी के शिष्य जैमिनि मुनि भगवान् शिव की स्तुति करते हुए कह रहे हैं कि "जो स्मरणमात्र से संसार-बन्धन का नाश करनेवाले हैं, आपके उन दिव्य नामों

का हम सैकड़ों वर्षोंतक कीर्तन करते रहें।" भावार्थ यह है कि भगवान् शिव के अनेकों नाम हैं। वे सभी स्मरणमात्र से भवसागर से पार लगानेवाले हैं।(नारदपु. उत्तरभाग अ. -73/89)

स्मृतिमात्रेण संसारविनाशकराणि ते।
नामानि खलु दिव्यानि प्रब्रवाम शरदः शतम्।। (नार. महा पु. उ. 73/89)

सूतसंहिता का कथन है कि रुद्रजापी महापातकरूपी पंजर से मुक्त होकर सम्यक-ज्ञान प्राप्त करता है और अन्त में विशुद्ध मुक्ति प्राप्त करता है। रुद्राध्याय के समान जपने योग्य, स्वाध्याय करने योग्य, वेदों और स्मृतियों आदि में अन्य कोई मन्त्र नहीं है।

रुद्रजापी विमुच्येत महापातक पञ्जरात्।।
सम्यक ज्ञानं च लभते तेन मुच्येत बन्धनात्।
अनेन सदृशं जप्यं नास्ति सत्यं श्रुतौ स्मृतौ।।

(सूतसंहिता, यज्ञवैभवखंड पूर्वभाग अध्याय 2/36-37)

सूतसंहिता में आगे कहा गया है कि प्रेमपूर्वक शिव या रुद्र का जप करने से अन्य सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। अतः रुद्र के जप से भुक्ति एवं मुक्ति की प्राप्ति होती है-ऐसा प्रसिद्ध है।

शिवे रुद्रजपात्प्रीतेप्रीता एवान्य देवताः।
अतो रुद्रजपादेव भुक्तिमुक्ति प्रसिध्यतः।। (सू. सं., यज्ञवै. खं. पू. भा. 2/41)

शिवनाम की महिमा कहाँतक कही जाय? पुष्पदन्ताचार्य ने अपने महिम्न स्तोत्र[1] में कहा है कि 'स्याही के लिये तो काजल का एक पहाड़ हो और समुद्र की दावात में उसे भरकर रखा जाय, कल्पवृक्ष की टहनियों की कलम बनायी जाय और पृथिवी को कागज बनाकर भगवती सरस्वती अनन्त कालतक लिखती रहें तब भी हे प्रभो! आपके गुणों का अन्त नहीं आ सकता।' भला, जब माता सरस्वती ही भगवान् के गुणों का वर्णन करने में असमर्थ हैं, तब दूसरा कोई इस कार्य को क्या कर सकता है? भगवान् का नाम-कीर्तन जीव के लिये परम अवलम्बन है, इससे बड़ा सहारा और कोई हो ही नहीं सकता। नाम पर विश्वास करनेवाले मनुष्य को इसके प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं होती। जिसने भगवन्नाम का आश्रय ले लिया, वह स्नेहमयी जननी की सुखद गोद की

---

1. **असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे**
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश! पारं नयाति।। (शिवमहि. स्तोत्र 32)

भाँति भगवान् की निरापद गोद में सदा के लिये जा बैठा। परंतु यह विश्वास और श्रद्धा के बिना नहीं होता। विश्वास हुए बिना मनुष्य भगवन्नामका आश्रय नहीं लेता। भगवन्नामका आश्रय लिये बिना मन से जगत् के विषयों का आश्रय नहीं छूटता और जबतक विषयों का आश्रय है, तबतक किसी प्रकार भी सच्चे सुख और शान्ति का अनुभव नहीं हो सकता। वासनानाश का सर्वोत्तम उपाय मन को प्रभु के नाम-जप-कीर्तनादि में बराबर लगाये रहना और विश्वास करना ही है।

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

गंगा का माहात्म्य

जो मनुष्य सहस्त्रों योजन दूर से भी गंगाजी का स्मरण करता है, वह पापाचारी होनेपर भी परमगति को प्राप्त होता है।

योजनानां सहस्त्रेषु गंगां स्मरति यो नरः।।
अपि दुष्कृतकर्मासौ लभते परमां गतिम्।

(पद्ममहापु. स्वर्गखण्ड 41/14-15)

जिनका चित्त पाप से दूषित है, ऐसे समस्त प्राणियों और मनुष्यों की गंगा के सिवा अन्यत्र गति नहीं है। गंगा के सिवा दूसरी कोई गति है ही नहीं। भगवान् शंकर के मस्तक से निकली हुई गंगा सब पापों को हरनेवाली और शुभकारिणी हैं। वे पवित्रों को भी पवित्र करनेवाली और मंगलमय पदार्थों के लिये भी मंगलकारिणी है।

सर्वेषां चैव भूतानां पापोपहतचेतसाम्।
गतिरन्यत्र मर्त्यानां नास्ति गंगासमा गतिः।।
पवित्राणां पवित्रं या मंगलानां च मंगलम्।
महेश्वरशिरोभ्रष्टा सर्वपापहरा शुभा।। (पद्ममहापु. स्वर्गखण्ड 43/56-57)